ISSN No. 2583-3316

# गर्भवती गाय/भैंस की देखभाल एवं रखरखाव

**असलम[1*] एवं विनोद धर[2]**

[1]पशुधन एवं कुक्कुट प्रबंधन, एस.वी.वी.वी., इन्दौर

[2]विभागाध्यक्ष श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर

**पत्राचारकर्ता : aslam80245@gmail.com**

## परिचय

कृषि हमारे देश का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण व्यवसाय है। लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या यहाँ इसी व्यवसाय पर निर्भर रहकर अपना जीवन यापन करती है। पशु कृषि व्यवसाय का आधार है। भारतीय कृषि को बड़ी मात्रा में पशु शक्ति डेरी पशुओं से प्राप्त होती है। जहाँ खेत की प्रारम्भिक जुताई से लेकर उपज को ढाकर बाजार तक पहुँचा देने का अधिकतर कार्य भैंस तथा भैंसा करते है। गाय तथा भैंस कृषकों के लिए दूध, दही, घी आदि दुग्ध पदार्थ प्रदान करती लेकिन इन सब के विकास का श्रेय ग्याभिन गाय भैंस से ही जाना चाहिए क्योंकि जब तक हम ग्याभिन हुए पशु की अच्छी देखरेख नहीं करेंगे तब तक किसान को अच्छी नस्ल का न तो बैल प्राप्त होगा न ही दुधारू गाय।

ग्याभिन पशु की देखभाल अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक करनी पड़ती है। ग्याभिन होने के पश्चात् लगभग एक गाय 9 महीने 9 दिन (283 दिन) और भैंस 10 महीने 10 दिन (310 दिन) में बच्चा देती है। अतः किसान/पशुपालक को पशु के ग्याभिन होने की तारिख पता होना अवश्यक है। ग्याभिन होने से लेकर ब्याने तक पशु के प्रति निम्नलिखित सावधानियों की अवश्यकता होती है।

- ग्याभिन पशु को शांत वातावरण में रखा जाना चाहिए।
- केवल साधारण व्यायाम ही दिया जाए। उसे न तो दौड़ाया जाना चाहिये साथ ही साथ उसे कुत्ते से भी बचाव करना चाहिये।
- गाय भैसों को ग्याभिन अवस्था में उनके वजन के अनुसार 1-1.5 किलाग्राम दाना अलग से प्रतिदिन दिया जाना चाहिए।
- ब्याने की अनुमानित तिथि से 2 माह पूर्व से पशु का दूध निकालना बंद कर देना चाहिए।
- ग्याभिन पशु को दिया जाने वाला दाना पाचक एवं स्वादिष्ट होना चाहिए।
- गायों अथवा भैंसों के थनों को सुखाने के बाद थनों के छिद्रों पर जीवाणु रोधक घोल लगाना चाहिए।
- ब्याने के लगभग छः सप्ताह पूर्व पशु को विशेष खिलाई पिलाई की आवश्यकता होती है।
- प्रति पशु लगभग 30-35 किलोग्राम हरा चारा 3-4 किलोग्राम सूखा चारा और 50 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए।
- पशु के राशन में मक्का, गेहूँ या अन्य अनाजों के दानों के साथ गेंहूँ का चोकर तिलहनी फसल की खली, नमक, खनिज मिश्रण एवं दलहनी फसल की भूसी अथवा छिलका देना चाहिए।
- पशु के ब्याने के 15-20 दिन पहले उसे पशु झुण्ड से अलग एक कमरे में रखना चाहिए।
- कमरे की साफ सफाई के साथ साथ उसमें ताजी हवा एवं प्रकाश का समुचित प्रबंध होना चाहिए।
- जिन पशुओं के ब्याने से पूर्व दूध उतर आता है। उसे ब्याने से पहले नहीं दुहना चाहिए। इससे गाय अथवा भैंस के ब्याने में विलम्ब होता है तथा पशु को ब्याते समय अधिक कष्ट भी होता है।
- पशु को कृमि नाशक दवा एवं टिकाकरण पशु चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए।
- ग्याभिन पशु को पीने के लिए कम से कम 45-65 लीटर स्वच्छ और ताजा पानी प्रति दिन उपलब्ध होना चाहिए।
- सर्दी, गर्मी एवं वर्षा तीनों मौसमों में पशु के रहने के लिए उत्तम व्यवस्था करनी चाहिए।

ISSN No. 2583-3316

**प्रसव एवं ब्याने के समय पशुओ की देखभाल:**

- पशु को ब्याने के समय शांत वातावरण में साफ और फर्श पर धान की पुआल व गेहुँ के भूसे को बिछा देना चाहिए।
- पशु को पीनें के लिए हल्का गुनगुना पानी देना चाहिए।
- पशु के ब्याते समय उसकी देखभाल के लिए किसी एक ही आदमी को रहना चाहिए। अगर पशु को ब्याने में कोई परेशानी आए, तो तुरंत पशु चिकित्सक को बुलाना चाहिए।

**गाय एवं भैंस के ब्याने के बाद की देखभाल**

- पशु को गुनगुने पानी से भीगे हुए कपडे से साफ कर दें।
- पैदा हुए बच्चे के नथुने तथा मुँह आदि को साफ करके कोलस्ट्रम पिलाना चाहिए।
- 2-4 घण्टें के अन्दर जेर (प्लेसेंटा) स्वतः निकल जाती है। यदि 8 घण्टें तक जेर न निकले तो स्वतः निकलवाने का प्रयत्न करें।
- पशु जेर न खाले, इसका ध्यान रखें तथा जेर गिरने के बाद उसे जमीन में गड्ढा करके गाड़ दे।
- पशुशाला, जहाँ पशु ने बच्चा दिया हो, की सफाई फिनाईल के घोल से करें।
- जो पशु अधिक दूध देने वाले हो, उनसे खीस एक बार में पूरी न निकालें बल्कि थोड़ा थोड़ा करके दिन में 3-4 में निकाले। एक बार में सम्पूर्ण खीस निकालने से मिल्क फिवर बीमारी होने का डर रहता है।
- ब्याये हुए पशु को गेहूँ का दलिया, गुड़, सौंठ और अजवाइन आदि को मिलाकर पकाकर खिलाना चाहिए। अथवा प्रसव के उपरान्त गाय भैंस को 2-3 बार काढ़ा (200 ग्राम अलसी, 100 ग्राम अजवाइन, 50 ग्राम सौंठ ) 5 लीटर पानी में खूब पकाकर उसमें एक किलो गुड़ मिलाकर पिलाने से पशु के स्वास्थ के लिए उत्तम होता है।
- ब्याये हुए पशु को लगभग एक सप्ताह तक हल्का गुनगुना पानी ही पिलाना चाहिए।

**निष्कर्ष**

गर्भधारण किये हुए गाय एवं भैंसों की देखभाल बहुत ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कभी-कभी इस प्रकार की लापरवाही बरतने से पशु की मौत भी हो सकती है। गर्भकाल में पशुओं के भली प्राकार से रखरखाव की जानकारी पशुपालकों को अवश्य होनी चाहिए।

**संदर्भ**


- Hand book of Animal Husbandry and dairy (ICAR)
- Live stock in production management-Dr. Jagdish Prasad
- Live Stock Production management - NSR Shashtri


❖❖